

हृदा विभाग नवोन्मेष



सम्पादक मंडली

सम्पादिका : चित्तमयी डेका

सहसम्पादिका : पूजामणि कलिता,
जयश्री दे

मार्गदर्शक : श्री भरविन्द कुमार शर्मा
डॉ. उन्मेषा कोवङ

अलंकरण : प्रार्थना, राजेशा, सुंभागना,
उपासना, श्रुति

सदस्य : बागस्मिता, चित्तमई, इक्षा,
जापैद, निश्चिल, जिन्तु नथा
विमान के सभी विद्यार्थीयों
को धन्यवाद ।

सम्पादकीय

जय मृत्री की परभूषि और संबूधि के बारे में हाथों से हात
आपका स्वकाम भले-बहु है - 'कृषि और कृषि'। कृषि और कृषि
एक दूसरे का परिवृक्ष है। कृषि समाज का आदना है, तो कृषि
समाज जीवन का पूरा। कृषि एवं लोकन निवारिक है तो दूसरा
जन जीवन का रेगीन अधि द्विजलगता है।

कृषि कार्य के लिया द्वारा की शक्ति ज्ञान
पा जाता है। पा आज के आधुनिक पुण में कांशिदत्ता के चलते
विश्वान के नवे-नवे मशीनों को लगार पाइपरिक तरोकों को
द्रू किए जा रहे हैं। किसानों के लिये उन्होंना प्रयोग नितना प्रदर्शाद
है उन्होंना ही तकनीफ द्वारा भी। स्टैटिन के द्वारा कोई यह नहीं करता
कि मजदूरों की मजदूरी वभी शून्य हो जाती है। जैसे ही दावहर के आनंद है,
वाट हुआ है। उसके भलाबा किसानों को हलारे मुसीखों का सामना
करना पड़ता है। उदाहरण स्वरूप कुछ महीने पहले की पंजाल के
कृषक आंदोलन को देख सकते हैं।

होक उसी तरह कृषि है समाज का उद्भव नक्त।
लिये तरह समझ सूचिज्ञता में धर्म की रोरानी प्राण-संचार करती
है वैसे ही कृषि भी सारंक्षिक परभूषि में विशेष भूमिका निभाते हैं।
कला-कृषि के माध्यम से ही उच्च जाति की सज्जा परिस्फूट हो उठते हैं।
कृषि जाति के निभू कोणे में रहते बाला आदर्वि अंग हैं।

जन-जीवन के दून दो सम्पूरकों को कलग्रन्थ
रूप देने का प्रयास किया जाता है हमारे 'प्राचीर पत्रिका' 'नवोन्मेष'
की पहली संख्या में। इस संख्या को सर्वांग भूत्तर बनाने में
सहयोग करते बाबे विभागीय शिक्षा-शूल के साप कर्मनिष्ठा
से अपना द्वाधित पातन करने बाबे प्रालेक विभागीय
सदृश्य को उसों के माध्यम से तहे द्वितीय से धन्यवाद।

सम्पादिका
चिन्मयी डेका

जीवन दाता

पेड़ी को काटते दैखा तो,
चिड़िया हुई उदास
बोली चिड़िया पेड़ काटकर
कैसे लौभी सोँस ?
पेड़ हमारे जीवन दाता—
हम हैं उनके दास ।
पेड़ी से हम सब जिंदा हैं,
पेड़ नहीं तो लाश ।

— प्रार्थना बरवा—

मूल-पात्र
नालों उड़ाता है जूहा
जूलों हम बाट देख रेहे थे
उगड़ीलन में दीवाली लाए
— पिंडहु उड़ाता

जीवन दाता

पेड़ों को काटते देखा तो,

चिड़िया दूई अदास

बोली चिड़िया पेड़ काटकर

कैसे लोगे सौस ?

ऐड़ हमारे जीवन दाता

हम हैं उनके दास ।

तेज़ी से हम सब निंदा हैं,

पेड़ नहीं तो ताशा

पाठीना बरवा

ल संख्याति है पर्व,
है इसमें जमाव ।
पहां पर है गाम,
है भारत का छेषनाम !
ग सोहार
ग जाता है,
गने दी जाहन, सति संगम
गाजा है ।
गर्म ओर
है,
लो घट लगा देते हैं ।
उड़ता दोर
है,
सम्मान बनाक दखती है ।
सी संस्कार लुक लोल जाकी है,
देख लगे ही जा ची है ।
उड़ना बों से ज जाए कोर
संसार,
हों के आपने पहार ।
→ सौमुमी शका



मैं धुप वेश दर्शन में अपने हितों की शराफत
विद्युत भूषण पर वैशिष्ट्य छड़े हैं ॥
जा छब लखने आस है अब देश देखिये,
देश में बिजर, सड़क पर दिसां छड़े हैं ॥

— मिश्रा रौप

हरियाली

धैरुः लगाओँ हरियाली लओ
भावतः मैं हरियाली नाओँ
किशन की छेत और
बाताबशण की शुद्ध ढनाओँ।
झोंघन दाता है छेत
कम्लकी भाती है हरियाली
शुद्ध हवा घट हमकी देती
फल फूल ग्रे हमकी देती
भूख प्यास है बीज मिटाती
नाठों जनता के पिट भगाती
आओ दृम क्षब पैस पौंछी लगाएँ
जगजीवन मैं हरियाली लगाएँ

— चिन्मर्द बरुवा —

भारतीय संस्कृति

भारत ने बहुत रोचक और प्राचीन संस्कृति है पर्ह,
व्यूहों की विभिन्न धर्मों की संस्कृति है इष्टमें समाई।
विविधता में उक्ता का कथब यहाँ पर है आम,
इसी कारण तो पूरे विश्व में है भारत का छेंवानाम।
अपनी संस्कृति में हर धर्म का स्पोहार
बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है,
यहाँ सभी धर्मों की माधा, खाने की आढ़त, शीति-रिगवा-
आदि को सम्मान दिया जाता है।
पूर्व-पर्सियम, उत्तर-दक्षिण चारों ओर
हर तरह के लोग रहते हैं,
त्रिवेन उद्गमस्थ का शंखेशा यह लोग देते हैं।
हमारी संस्कृति ही हमसे उक्ता ओर
शिष्टाचार आपम इखती है;
भारत माँ का मान-सम्मान होनाए रखती है।
परंतु फिर-ब-फिर हमारी संस्कृति लुफ्त होती जा रही है,
व्यूहों की विश्व दाता आवृद्धिक होती ही जा रही है।
हृषि कोई यह ध्यान इखता की हो जे जाए कोई
अपनी संस्कृति से अवलोकन,
व्यूहों की अपनी संस्कृति ही है अपनी पदधारी।

→ मौसुमी शब्द

पट्टेलियाँ

(क) कठोर भी हूँ और मदंगा भी
 उल्टा करो तो सफर कर
 करवा दू सबमें झगड़ा
 मुंह मे रख लो तो प्राण हँ

उत्तर:- हीरा

(म) कीनसी चीज बच्चे को
 जवान और जवान को
 बुद्धि बना देती है !!

उत्तर:- वक्त

(ग) वो कौन है जिसे इबता
 देख कर भी कोई उसे
 बचाने नहीं जाता ?

उत्तर:- सुर्य

(घ) काला घोड़ा सफेद सबारी
 एक उत्तरे तो दूसरे की बारी

उत्तर:- तवा और शेती

- संग्राहिका:- मुनमी शर्मा

असम का कृषि विस्तार

असम के कृषि इलाज में अपार संभावनाएँ हैं। विशेष रूप से ब्रह्मपुर और बराक नदी की उपरिथित के काशन। ब्रह्मपुर और बराक नदी की धारी की मिट्ठी इतनी उपजाऊ है कि आरतीय उपमहादीप के अधिकांश विस्तों में उत्पादित कृषि फसलों का उत्पादन समव है। यहां तक कि मौसम भी काफी अनुकूल है।

असम खाद्य और नकदी दोनों फसलों का उत्पादन करता है। राज्य में उत्पादित प्रमुख खाद्य फसलों धान, मक्का, फाले, आलू, गेहूं आदि हैं, जबकि प्रमुख नकदी फसलें चाय, छुट, तिलहन गन्ना, कपास और तंबाकू हैं।

असम पूरे भारत में फसलों की किसी के उत्पादन के लिए शीर्ष पांच सबसे सुविधाजनक राज्यों में से एक है। हालांकि चावल असम की सबसे महत्वपूर्ण और मुख्य फसल है, लेकिन पिघले कुछ वर्षों में इसकी उत्पादनता में झीक्क- नदीं दुर्दृश्य है, जबकि अन्य फसलों में उत्पादन और भूमि शक्ति दोनों में मासूली झीक्क- देखी गई है।

पाथ असम की सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसल है और यह राज्य अपनी चाय के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। असम की आवादी का उक्कलडा विस्ता चाय उद्योग से संबंधित माध्यमिक और तृतीयक दोनों पर निर्भर करता है, विदेशी मुद्रा के आवध के स्तरों के स्पष्ट में महत्वपूर्ण चाय और पट्टसन की पैदावार मुख्यतः ब्रह्मपुर धारी में होती है। अन्य फसलों में तिलहन, इसके पर्ने, फाले, गर्जी, भर्या, आलू एवं फल हैं। राज्य के ज्ञायान-की कुल पैदावार खपत से ज्यादा है जबकि तिलहन इन फालों से यहां की आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती।

खुशीयों की विद्या

तुम भुजे प्रश्न कर रही हो—

“सुख की वद्धात् क्या है ?”

एक किसान के आर्यों को गोई से हेला

जब खेत की दृश्याली उनकी आर्यों में चमकती है ,

मैंने शूखे मिट्ठी से समर करते हुए अनुदाता की हेला है ,

मेरे खेतों की दृश्याली में आज तुम प्रेम गीत गा रही हो ?

कैसे समझाऊ तुम्हे , मैंने इसी खेत में कितनी ब।२-

खुड़की परते हुए हेला है ,

— दीपशंखा गायत्रे ।

लीक प्रचालन

स्पाइग्नी ऐ बढ़कर कोई अंगार नहीं
दौता और विभ्रमता ऐ बढ़कर कोई
व्यवहार नहीं दौता ।

संग्राहक – राजेश कुमार पासवान

कृषि और संस्कृति -

भारत-एक-कृषि-स्थान देश है, देश की अधिकांशा जनसंख्या-
गाँवों में है तथा कृषि-शब्दों कार्यों पर निभिन्नता है,
भारत की अर्थव्यवस्था कृषि कार्यों पर व्यापक निभिन्नता-
है। दूसरे क्षाय-क्षाय भारत क्षास्कृतिक कप की भी ज्यादा सम्भानि-
स्यव्यवस्था है। यहाँ पर विभिन्न क्षास्कृतियों की जुड़ी लोग आपका
मैं निल-जुल कर अपनी-अपनी क्षास्कृतियों के बंगों की शब्दों को
संगीत करते हैं। हम भारतीय लोग संस्कृति के विभिन्न कपों की भी
उत्सर्व कप में युवा के क्षाय बनाते हैं।

भारत के विभिन्न स्थान कृषि पर्यावरण की जड़ित है। बंगाल-
भट्टीनेर में संस्कृति भगवान कप धारण करती है। दूसरा समय अक्षम,
पंजाब, हरियाणा आदि जगह के छेत्रों में हरियाली देखने की निलती-
है। कर्नाटक मास में खेत में धान की फसल लगाना चुक करते हैं।
आदि मास की क्षास्कृति में भारत के विभिन्न स्थानों पर जो भी फसल
जैयाए होती है उसके बंगल बनाकर भगवान की भोग जगाया जाता-
है। दूसरी तरफ भारत के विभिन्न स्थानों में कृषि के क्षाय विभिन्न
संस्कृति जुड़ा हुआ है।

— शुभमणि - कलिता -

कृषीवलः

नवपाषाण फाल से चला आ रहा है,
 इन किसानों में हमाश भार।
 प्रभात में उठ प्रणाम कर जननी,
 जाते हुल चलने,
 न रखे मौक्षम का व्याल,
 ग्रीष्म, शरद वर्षा में,
 कम वही होता उनका काम।
 पशु-पक्षी हैं उनके मिस्त्र,
 सदाथक बजाते रह छू-हाल।
 वृशि-मरी है यह सुखद-जीवन,
 जो है उनकी मांझी का तार।
 रेत की सुनदारी बालीयों में,
 ओवलोकन है उनकी श्रम-सिक्क का फल।
 देख-झूमे नाचे हर गीत,
 बैसाखी, औषाम, औंगल, आदि कृषि की,
 पर शुभ मौष्ट्रिय सारी।
 समय का छक धूमा,
 किसानों पर भार अब ज्यादा बढ़ा,
 काल की यह आंधी आई,
 शोषण की थहर आंधी आई!
 इद्या में हे देवे हर-पल,
 वह सुनदारी किरणी,
 लापता हो चलो।
 सरकार के अंदे गुलाम,
 प्रहार-पर-प्रहार किश चले,
 अनन-दाना ने ना हर मानी।
 जर्जर शुश्रृ हो गई,
 इन शक्षमों से मुक्त होन का,
 उनकी अपनी किरणों की वापस लाने की,
 आंधी अब भोड़ी रक्की गी,
 या जैन अंदे गुलाम का
 जो पागल-पन में मारे गए,
 अद्य समय तक, धैन की शंख ठोक ली।
 हर वर्ष आता है उनका शुभ फाल,
 पर कभी न आया,
 उनकी सुनदारी जीवन का वह गीत।

माजुली

ब्रह्मपुत्र के गोद में बसा है जो
नदीं द्वीप माजुली है वो,

शान है वो देश की
जान है वो असम की
आखिर सबसे बड़ा नदी द्वीप है वह संसार की,

हो जानना अगर इतिहास तो
आज दक्षिणपात् सत्र में
अकसर दीवाने प्रकृति के खो जाते हैं
इनकी अनोखी खूबसूरती में,

प्रकृति और प्रेम का सम्मिलण है यहाँ
बरसात में डेसा नजारा है यहाँ
जो आज कभी धूमने यहाँ
लुफ्त जरूर उठाए नौका - विहार का यहाँ,

अनेकता में इकता की मनमोहक मिसाल है
मिसिंग, देउरी, अहोम, सोनोवाल, कछारी;
विभिन्न संस्कृति का बास ही इस भूमि की पहचान है॥

-जयक्षी डे

मैंने उसको (किसान)

मैंने उसकी
जब जब देखा

लौहा देखा

लौहा जैसे

तथा देखा

गलते देखा

ठलते देखा

मैंने उसकी

गोली जैसा चलते देखा ।

— राजेश कुमार पात्रवान-

फिल की बातें

सभी को इस जगति में सब कुछ दर्शित नहीं होता
नहीं की हर लहर को तो सदा साहित नहीं मिलता
ये फिलवालों की दुनिया है अजब है दास्ता इसकी
कोई फिल से नहीं मिलता, किसी से फिल नहीं मिलता
ज्ञार की तमाज़ा नहीं थी, हो गया,
फिर संभाल कर रखा था, यद्यु ८ ग्राम
किसा किसी औद का नहीं, ये आपकीती है,
हार कुलों का भर, मुरझा गया ।

— भृव श्राव वसुमतीशी

३०५

भाषण-प्रकृति स्थान देखा है, देश की अधिकांश जनसंख्या
मेरी वहाँ है तथा कृषि व्यवस्था काफ़ी प्रयोगशील है।
उसके अलाउद्देश्य पृथिवी पर लालों का बहुत विवरण-
ज्ञान का लाभ-काम भाषण कर्मसूत्रिक क्रप से भी ज्ञाना नहीं-
ज्ञान देखा है। यहाँ पर विभिन्न व्यवस्थाओं के बारे लोग आपस
में बातचीत कर अपनी-अपनी व्यवस्थाओं के बारे से कहीं को
बताते हैं, इस आवश्यकी तीव्र महसूस के विभिन्न कठीं औं की
उनके बारे में चुनौती के साथ बताते हैं।

भाषण-प्रकृति स्थान कृषि प्रयोग के विविध हैं जैशास्त्र-
प्रयोग सोनोहर क्रप धारणा क्षेत्रों में दूसरी क्षमता अलगा,
जब हरियाणा उत्तर दिल्ली के उत्तरी भूमि हरियाणा दृष्टिकोण से हिमाचल
क्षेत्रिक व्यापक के जैत ही धारणा की कफ़लत लाना बहुत कठिन है।
जबकी जैतकी है तो भाषण के विभिन्न क्षेत्रों पर जैत कफ़ल
होती है उत्तरी व्यापक बड़ाकर भागांत जैती जागाए जाना बहुत
हरीकी तरह बड़ाकर है तो विभिन्न स्थानों मेरी कृषि के लाभ विभिन्न

— पुजामणि कलिता,—



अथर्ववेद

वसु शैरी की पक्षपात्री और लक्ष्मी के बीच में यहाँ से हाइ
प्राप्ति भवतान् वसु-लक्ष्मी हैं। लक्ष्मी और हार्षिणी की अंतर की दृष्टि
का विषय यह विविधता है। हार्षिणी ताजे का आवश्यक है, जो हार्षिणी
साथ का लोकन व्यंगा है। वसु उसका लोकन विविध है तो हार्षिणी
जब लोकन का रौमिनी अधिक दिव्यतामय है।

कृषि कार्यों के लिए ट्रैक्स की शक्ति लगानी पड़ता है। इस अपर्याप्त क्षमता के बहुत से विद्युत विभागों द्वारा यह यांत्रिक उपकरण में व्यवहार के लिए विकसित किया जा रहा है। इसीलिए यह यांत्रिक उपकरण विभागों की विभिन्न विधियों की लाइसेंस यांत्रिक तकनीकों को दी जाती जा रही है। इसीलिए यह लिए गए उपकरण प्रयोग विभाग विभागों के उपकरण ही लकड़ी-बोर्ड ट्रैक्स के लिए उपयोग किया जाता है। इसके बाहर के लिए यह उपकरण विभिन्न विधियों की लाइसेंस दी जाती है। इसके बाहर के लिए यह उपकरण विभिन्न विधियों की लाइसेंस दी जाती है। इसके बाहर के लिए यह उपकरण विभिन्न विधियों की लाइसेंस दी जाती है।

तोक जीने उड़ा हुए हैं तभी का ठग्नात बढ़ाया।
जिस तरह समझ लूटेवाले वे उसी की रोकानी प्राण-संतान करते हैं तो वे ही युवा भी लूटेवाला भरपूर है तब तभी लूटेवाला भरपूर रिक्षावाही है।
लूटेवाले के लूटेवाला तो ही एक लाजी वी लूटेवाली दृष्टिकोण ही अस है।
हुए हुए के विषम कानों वाले वाला आदमी वी अस है।

जय-संकेत के दूसरे संस्कृत के संस्कृत
द्वितीय अंग प्राप्ति का रूप है इसके 'वाचोव विभाग' 'वाचोव'
की पाठी में यह है। एक संकेत का संकेत बुद्ध ज्ञानी ते
र अनुमान करते नहीं विभागीय विभाग-दूसरे शास्त्र विभागीय
से अक्षय द्वितीय प्राप्ति करते वही प्राप्ति विभागीय
संकेत हो जाता है। आखर से नीचे दिल है विभागीय

۳۷۴-۷۔ پڑاہ کیوں چلے،
 اُنکے دل میں نہ تھا ساری
 جنگ بُریٰ ہے جو،
 انہوں نے کوئی نہیں کیا،
 انہی کوئی کیوں کے پاس لے لونے کی
 اُنہی کوئی پوری کیوں کے پاس لے لونے کی
 بُریٰ جنگ اُنہیں بُریٰ بُریٰ کیا
 جو پادشاہ پن سے مُسےٰ ہے،
 اُنہی سپاہِ نکلے، نہیں کیا جائے جسے ت لی
 ۸۲ وہی اُنہاں سے دنکا بُریٰ کال،
 اُنہی کیوں اُنہاں،
 اُنہی سُنکھنپیں بیویں کا ہے ٹیکا۔

— उपासना भगवती



प्रकाश आर प्रेम का अस्पृश्य है यह
बरसात में देखा नजारा है यह
जो आठ कमी धूमने वही
लुफा जखर उठाए नेका - बिहर का यही,

अनेकता में इकता की समोद्दृश निष्ठा है
मिथि, देउरी, अहं, भेनेवल कहाँ
विभिन्न संस्कृति का बास ही ल्ल धूनि की पहान है,

-जयकी हे

तेहाट नक्ति के कलम से

सुनील चौहान
२३/८/१९८८